ISSN 2347-2723 Impact Factor : 2.0260 (UIF) Volume - 4 | Issue - 1 | August - 2016

Review of Literature

संगीत मीडिया में व्यवसाय की सम्भावनाएँ

डॉ॰ नीलिमा सिंह

सहायक प्रोफेसर, संगीत विभाग, एस डी महविद्यालय, हांसी, हिसार(हरियाणा)

प्रस्तावना :

गायन, वादन और नृत्य की समन्वयात्मक संज्ञा संगीत है। संगीत आदि काल से ही भारतीय संस्कृति का प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण अंग रहा है। हमारे आदि देवी–देवताओं के साथ संगीत का सम्बन्ध इस बात को प्रमाणित करता है कि संगीत का मूल विषय अध्यात्मिकता ही रहा है, परन्तु कालान्तर में यह परिवर्तित होते–होते मानव की अध्यात्मिक भावनाओं के साथ–साथ सामाजिक, शृंगारिक, रंजनात्मक एवं व्यावसायिक प्रवृत्तियों एवं भावनाओं को भी आधार प्रदान करने लगा। वैदिक काल में इसी संदर्भ में सामगान और देशी अथवा लोक संगीत; दोनों के प्रचलित होने के प्रमाण मिलते हैं। मुख्यरूप से समाज का ब्राह्मण वर्ग प्राचीन समय से ही विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक कर्मकाण्डों से सम्बन्धित रहा है और ऐसे अनेक साक्ष्य भी उपलब्ध हुए हैं, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि इन सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक कृत्यों में संगीत का व्यवहार अनिवार्य रूप में होता था। यह सर्वविदित ही है कि कोई भी व्यक्ति, परिवार, समाज अथवा वर्ग अपनी आजीविका के लिए किसी न किसी कार्य को व्यवसाय के रूप में अवश्य ग्रहण करता है। अतः प्राचीन अथवा हमारी संस्कृति के आदि काल में ही संगीत का व्यवहार एक विशिष्ट वर्ग, जाति अथवा सम्प्रदाय के द्वारा व्यावसायिक रूप में होना स्वाभाविक ही जान पड़ता है। इसी काल अथवा संगीत की स्थिति को हम संगीत के व्यावसायिक पक्ष का उद्‌भव अथवा आरम्भिक काल मान सकते हैं।

कालान्तर में संगीत से सम्बन्धित विभिन्न व्यवसायी जाति अथवा सम्प्रदाय भी प्रकाश में आने लगे। इन विशिष्ट जाति अथवा सम्प्रदायों में भी आगे विभिन्न वर्गों का निर्माण होने लगा। कुछ लोगों ने संगीत को पूर्णतः व्यवसाय के रूप में अपनाया और कुछ लोगों ने संगीत की आत्मास्वरूप उसकी अध्यात्मिकता को सुरक्षित रखते हुए परमात्मा की आराधना को ही लक्ष्य में रखा, परन्तु अगर सूक्ष्म रूप से विश्लेषण किया जाए तो पता चलता है कि कहीं न कहीं इनकी आजीविका का आधार भी संगीत ही था। कालान्तर में विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक प्रभावों के कारण संगीत के इस द्वितीय वर्ग का लोप होने लगा और संगीत विभिन्न मन्दिरों एवं देवालयों से निकल कर राजाओं, सम्राटों व ज़मींदारों अथवा उच्च वर्ग के लोगों की प्रशस्ति एवं मनोरंजन का साधन बन गया। ये लोग कलाकारों को उचित वेतन देकर अपनी राज सभाओं में नियुक्त करते थे। अतः इस काल में संगीत पूर्णतः एक व्यावसायिक कार्य के रूप में उभर कर सामने आया। निःसंदेह ही मध्य काल में संगीत में विभिन्न प्रभावों से शृंगारिकता का आधिपत्य हो गया था, किन्तु किसी न किसी रूप में अध्यात्मिकता भी उस काल में किञ्चित मात्रा में ही सही परन्तु अवश्य व्याप्त थी।

इसके विपरीत आधुनिक काल में प्राचीन समय से चली आ रही कुछ बन्दिशों में शाब्दिक अध्यात्मिकता के दर्शन तो भले ही होते हों, परन्तु सूक्ष्म रूप से देखा जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि आज के संगीत की आत्मा में अध्यात्मिकता का सर्वथा अभाव है। यहाँ संगीत का मुख्य उद्‌देश्य पूर्णतः परिवर्तित दिखाई देता है। परन्तु क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का गुण अथवा नियम है। अतः संगीत जगत को भी इस परिवर्तन को स्वीकार करना चाहिए। ऐसा करने पर ही संगीत का समुचित विकास एवं प्रत्येक वर्ग में व्यवहार हो पाना सम्भव हो सकेगा। आधुनिक काल में संगीत कला मूल रूप से केवल व्यवसाय के रूप में ही व्यवहृत हो रही है। अगर मन्दिरों में भी अच्छे गायक–वादक भगवान का गुणगान करते हैं, तो भी उनका मूल उद्‌देश्य अर्थार्जन ही होता है। इसके साथ ही मन्दिरों में जो औरतें नित्य भजन व कीर्तन आदि के लिए नियुक्त होती हैं, उनको भी यथोचित आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। प्रातः और सांय जो भजन एवं कीर्तन आदि के रीकार्ड मन्दिरों में बजते हैं, उनको भी बाज़ार से खरीदा जाता है।

भारत ने स्वतन्त्र होकर जब से अपनी राष्ट्रीय सरकार स्थापित की है, तब से संगीत का प्रचार एवं प्रसार द्रुत गति से बढ़ रहा है। संगीत को विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में स्वतन्त्र रूप से एक शिक्षण के विषय के रूप में ग्रहण कर लिया

गया है। विद्यालयों व महाविद्यालयों में निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार इसकी शिक्षा लगभग सौ वर्ष पूर्व ही आरम्भ हो गई थी। इस विषय में प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा से लेकर एम.ए., पीएच. डी., डी. म्यूज़ तथा डी. लिट् तक की उपाधियाँ प्रदान की जाने लगी हैं। जगह–जगह विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में कुलीन घरानों के युवक–युवतियाँ संगीत की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। जनसाधारण में भी संगीत के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हो रही है। आधुनिक अथवा वर्तमान काल में संगीत को व्यावसायिक दृष्टि से मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–शिक्षण पक्ष एवं क्रियात्मक पक्ष। शिक्षण पक्ष से हमारा अभिप्राय यहाँ संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली से है। इसके अन्तर्गत संगीत से सम्बन्धित विद्यार्थी के लिए व्यावसायिक दृष्टि से विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के साथ–साथ विभिन्न सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थाएं भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। नीजि स्तर पर चल रहे विभिन्न संस्थानों को भी हम इसी वर्ग में रख सकते हैं।

'संगीत' शैक्षिण स्तर पर अभी एक नवीन विषय है। इसलिए इसके शिक्षण पक्ष में अभी तक जो कार्य हो पाया है, निःसंदेह ही वह अतिमहत्त्वपूर्ण एवं प्रशंसनीय है, परन्तु अभी इसमें अत्याधिक सम्भावनाएं हैं। दूसरी ओर संगीत का क्रियात्मक पक्ष भी व्यावसायिक दृष्टि से विभिन्न सम्भावनाओं से युक्त है। यहाँ क्रियात्मक पक्ष से हमारा अभिप्राय संगीत के उस क्षेत्र से है, जिसमें कोई कलाकार अपने नीजि प्रयासों से संगीत के किसी एक वर्ग यथा–शास्त्रीय संगीत, अर्धशास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, पाश्चात्य संगीत, लोक संगीत और चित्रपट संगीत आदि विभिन्न क्षेत्रों में से एक या अधिक को व्यावसायिक दृष्टि से ग्रहण करता है। अगर संगीत से सम्बन्धित उच्चाधिकारी, संगीत शिक्षक एवं संगीत शोधार्थी संगीत के शिक्षण एवं क्रियात्मक दोनों पक्षों में उचित समन्वय स्थापित करने का प्रयास करें, तो संगीत का व्यावसायिक स्तर किसी भी अन्य विषय की तुलना में कम नहीं रहेगा।

वर्तमान में संगीत शिक्षण संस्थाओं में संगीत एक सम्मानीय व्यवसाय के रूप में विकसित हो रहा है। प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षण संस्थाओं में संगीत के विद्यार्थियों को एक शिक्षक के रूप में रोजगार भी प्राप्त हो रहे हैं। इसके साथ ही विभिन्न गैर–सरकारी संस्थाओं के माध्यम से भी विभिन्न लोगों को रोजगार प्राप्त हो रहे हैं। परन्तु यह कहना भी ग़लत न होगा कि आज भी ऐसे अनेक विद्यालय एवं विश्वविद्यालय हैं, जिनमें संगीत को एक शैक्षणिक विषय के रूप में पूर्णतः मान्यता प्राप्त नहीं हो सकी है। इसके साथ ही ऐसे भी अनेक विद्यालय एवं विश्वविद्यालय हैं, जिनमें संगीत को एक विषय के रूप में स्वीकार तो कर लिया गया है, परन्तु उसको उचित सम्मान नहीं प्राप्त हो सका है। बहुत से ऐसे भी विद्यालय हैं, जिनमें अध्यापक ही नियुक्त नहीं हो पाए हैं और ऐसे भी अनेक विद्यालय हैं, जिनमें ऐसे लोगों को शिक्षक के पद पर नियुक्त कर दिया जाता है, जिनको न तो विषय की ही उचित जानकारी होती है और न ही एक सभ्य व्यक्ति के संस्कारो की ही। ऐसे शिक्षकों का प्रभाव समाज एवं विद्यार्थियों पर विपरीत ही पड़ता है। इसका परिणाम यह होता है कि समाज में संगीत एवं संगीत से सम्बिन्धित लोगों की छवि गिरने लगती है। अतः संगीत के शिक्षक के पद पर इस प्रकार के अयोग्य एवं अशिक्षित लोगों का नियुक्त होना बहुत ही घातक एवं हानि दायक है। संगीत से सम्बन्धित विद्वजनों का यह परम कर्त्तव्य है कि वे संगीत को आहत एवं पतनोन्मुख करने वाले इस प्रकार के हानिकारक तत्त्वों से बचाएं एवं इसको विकास की ओर अग्रसर करने के लिए यथा संभव प्रयास करें।

आधुनिक अथवा वर्तमानकाल में संगीत से सम्बन्धित कुछ विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की संख्या में वृद्धि तो अवश्य हुई है, परन्तु आज भी अनेकों ऐसे विद्यालय अथवा विश्वविद्यालय हैं, जिनमें इस विषय का प्रवेश नहीं हो पाया है। ग्रामीण आंचल से सम्बन्धित विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में तो इनकी संख्या बिलकुल ही कम अथवा नाममात्र ही है। साधारणतः ऐसा भी माना जाता है कि जो विद्यार्थी संगीत विषय से विद्यालय या महाविद्यालय स्तर पर जुड़ते हैं, उनमें से 90 प्रतिशत का उद्देश्य अंक प्राप्त करना होता है। स्नातकोत्तर स्तर पर इस विषय में प्रवेश लेने वालों में लड़कों के अनुपात में लड़कियों की संख्या अधिक होती है, जो आज–कल कुछ नियमित भी होने लगी है। इनमें से अधिकतर विद्यार्थी वे होते हैं, जिनको अन्य कहीं प्रवेश प्राप्त नहीं होता। जो विद्यार्थी संगीत को एक विषय के रूप में चुनते हैं, उनमें से अधिकतर के पूर्वज संगीत से सम्बन्धित होते हैं। सामान्य विद्यार्थियों में से अधिकतर विद्यार्थी सुगम संगीत से प्रभावित होकर इस विषय को चुनते हैं, परन्तु जब उनका सामना विश्वविद्यालय की शिक्षण पद्धति से होता है, तो उनका यह भ्रम शीघ्र ही टूट जाता है कि वे कोई बड़े गायक, वादक या नर्तक बनेंगे। इस स्थिति में आकर कुछ विद्यार्थी; जो सक्षम होते हैं, विषय का परिवर्तन कर लेते हैं, किन्तु कुछ चाहते हुए भी ऐसा नहीं कर पाते हैं। परिणामस्वरूप इन विद्यार्थियों का भविष्य अंधकारमय हो जाता है।

विभाग अथवा विषय के संचालकों को इस विषय पर गम्भीरता से चिंतन करना चाहिए और विद्यार्थियों को शिक्षा देने के साथ–साथ उनके लिए रोजगार के उचित साधनों को जुटाने का भी प्रयास करना चाहिए। जो विषय रोजगार के उचित साधन जुटाने में बिलकुल ही सक्षम नहीं हैं, ऐसे विषय विद्यार्थियों के भविषय को ख़राब कर देते हैं। अतः ऐसे विषयों अथवा पाठ्यक्रमों के बारे में प्रशासन को गहनता से विचार करना चाहिए। अतः इस प्रकार की समस्याओं का निदान करना संगीत एवं शैक्षणिक प्रशासन के अधिकारियों का परम कर्त्तव्य होना चाहिए। सरकारी अथवा गैर–सरकारी संस्थाओं में संगीत के शिक्षकों का जो स्तर होता है, उसको शिक्षक ही अच्छी तरह समझते हैं। कई बार तो इन शिक्षकों को सामान्य मीटिंगों में भी नहीं बुलाया जाता। विद्यालय स्तर पर जो शिक्षक गैर–सरकारी स्कूलों में शिक्षण करते हैं, वे शिक्षक कम और हारमोनियम वादक अधिक होते हैं। बहुत से स्कूलों में तो वे अनपढ़ लोग संगीत की शिक्षा दे रहे होते हैं, जो रात को जागरणों में काम करते हैं या अन्यत्र कहीं निम्न स्तर पर संगीत के माध्यम से जीविकोपार्जन करते हैं। इनकी योग्यता को एक स्नात्तकोत्तर या पीएच. डी. के विद्यार्थी से अधिक भी कई बार आंका जाता है। वैज्ञानिकों, तकनीकी विशेषज्ञ, डॉक्टर तथा राजनीतिज्ञों के समान समाज में संगीतज्ञों का कोई विशेष स्थान नहीं बन पा रहा है। संगीत का व्यवसाय कुछ लोगों के लिए सभ्य और प्रतिष्ठित जरूर हो गया है, किन्तु पेशेवर लोगों को अब भी लोग तिरस्कार की दशष्टि से ही देखते हैं।

संगीत के क्रियात्मक पक्ष में भी अनेक प्रकार की अनियमितताएं देखने को मिलती हैं। शास्त्रीय संगीत के संदर्भ में यह बड़ी विडम्बना है कि संगीत का यह पक्ष बड़ा ही श्रम एवं समय साध्य होने पर भी बहुत अधिक अर्थ एवं प्रसिद्धि प्राप्त करवाने में सक्षम नहीं हो पाता है। बहुत अच्छा गायक भी अगर कम आयु का हो तो उसको भी एक सफल अथवा सम्पूर्ण गायक के रूप में पूर्णतः मान्यता नहीं मिल पाती है। एक सफल एवं निपुण शास्त्रीय गायक के लिए काफी अनुभव एवं आयु की अपेक्षा की जाती है। इसके साथ ही शास्त्रीय संगीत के अच्छे गायक भी अर्थ अर्जन में उतने सफल नहीं हो पाते, जितने कि सुगम, फ़िल्मी एवं लोक संगीत से सम्बिन्धित सामान्य गायक अथवा कलाकार होते हैं। शास्त्रीय संगीत के अच्छे अथवा चोटि के कलाकारों की ख्याति भी एक विशिष्ट वर्ग अथवा समाज तक ही हो पाती है। आम समाज में इन कलाकारों को लगभग न के बराबर ही जाना

जाता है। अतः संगीत के विद्वानों के लिए इस प्रकार के विषय चिंतनीय होने चाहिएं। संगीत के विद्वानों को भी चाहिए कि वे शास्त्रीय संगीत में ऐसी विशेषताएं उत्पन्न करें जिससे शास्त्रीय संगीत विशिष्ट समाज अथवा वर्ग की वस्तु न रह कर सम्पूर्ण समाज में अपनी पहचान बना सके और अर्थ एवं प्रसिद्धि दोनों को अर्जित करने में पूर्णतः सफल सिद्ध हो सके।

सुगम संगीत अथवा फ़िल्मी संगीत आज एक बहुत बड़े एवं स्थायी व्यवसाय के रूप में उभर कर समाने आया है। अनेकों गायक, वादक तथा सहगायक एवं सहवादक आदि अपनी आजीविका का अर्जन संगीत के माध्यम से सम्मानपूर्वक कर रहे हैं। विभिन्न कसैट एवं रीकॉड कम्पनियां तथा विभिन्न दूरदर्शन एवं रेडियो चैनलस् पूर्णतः संगीत के कार्यक्रमों पर ही आधारित हैं और सफलापूर्वक अर्थ एवं प्रसिद्धि प्राप्त कर रहे हैं।[1] परन्तु इस क्षेत्र में भी काफी भ्रान्तियां हैं। बहुत से चैनल केवल धन अर्जन के लिए नौजवानों को भ्रमित भी कर रहे हैं। ये नौजवान प्राकृतिक रूप से ईश्वर द्वारा प्रदान की गई अच्छी आवाज़ के कारण कुछ फ़िल्मी अथवा सुगम संगीत के गीत तो गा लेते हैं, परन्तु संगीत की विधिवत शिक्षा न लेने के कारण अथवा संगीत का आधारभूत ज्ञान न होने के कारण शीघ्र ही लुप्त हो जाते हैं। अतः इस प्रकार के कार्यों से कुछ लागों को व्यवसायिक दृष्टि से काफी लाभ तो हो रहा है, परन्तु बहुत से लोगों का भविष्य भी अंधकारमय हो रहा है।

इस संदर्भ में संगीत के वरिष्ठ विद्वानों का कर्त्तव्य बनता है कि संगीत के ऐसे कार्यक्रमों अथवा चनैलस् को एक नियमित व्यवस्था प्रदान करने में उनका सहायोग दें और उचित एवं संगीत का आधारभूत ज्ञान रखने वाले विद्यार्थियों अथवा लोगों का ही चुनाव करें और उन्हें आगे बड़ने का अवसर प्रदान करें। इसके साथ ही विशिष्ट चनैलस् एवं कम्पनियों को भी चाहिए कि वे इस प्रकार के कार्यक्रमों के संचालन में संगीत एवं संगीत व्यवसाय से सम्बन्धित वरिष्ठ अथवा अनुभवशील विद्वानों का सहयोग लें। इसके साथ ही शास्त्रीय एवं लोक संगीत, सुगम संगीत और फ़िल्मी संगीत में एक उचित समन्वय स्थापित करके इसको व्यवसायिक एवं सामाजिक दृष्टि से और अधिक उपयोगी बानाया जा सकता है। शास्त्रीय नृत्य के विकास में चल रहे कार्य सार्थक परिणाम लाने में उतने सफल नहीं हो रहे हैं, जितने कि होने चाहिएं। बहुत कम विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शास्त्रीय नृत्यों को विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। शास्त्रीय नृत्य से सम्बन्धित कलाकार भी काफी कम होते जा रहे हैं। वर्तमान समय में कुछ खास कार्यक्रमों को छोड़कर नृत्य के कार्यक्रमों का आयोजन नाममात्र ही हो रहा है। नृत्य व्यवसायिक दृष्टि से भी संगीत का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। अतः नृत्य के अच्छे भविष्य एवं इसके विकास के लिए सार्थक प्रयासों का होना अत्यावश्यक है।

इस ब्रह्माण्ड का सृजन व मानव की उत्पत्ति और विकास सम्भवतः हमारी सभ्यता के मूल स्रोत हैं। विभिन्न कालों में सभ्यता का विकास होता गया और साथ–साथ मानवता की उत्सुकता भी बढ़ती गई। इसी जिज्ञासा की तृप्ति का परिणाम हुआ विज्ञान। इस प्रकार मानवता के विकास के साथ–साथ ही विज्ञान की कहानी शुरु हुई। मानव प्रकृति को समझने की चेष्टा करता रहा है। मानव ने देखा कि सूर्य नित्य निकलता है और नित्य ही छिपता है। रात्रि के पश्चात् हमेशा दिन निकलता है। समय–समय पर इन्हीं चीजों को कुछ विचारकों ने तर्क–वितर्क द्वारा व प्रयोगों द्वारा समझने–समझाने का प्रयत्न किया। ये ही प्रयत्न कालान्तर में विज्ञान के रूप में सामने आए। संगीत के इतिहास की ओर दृष्टि डालने से पता चलता है कि कलाकारों की कला एवं मनोवृत्ति बहुत संकुचित थी। घरानेदार लोग अपनी कला का प्रदर्शन बहुत ही कम करते थे। उस समय ऐसे माध्यम भी नहीं थे, जिससे उनकी कला को सम्भाल कर रख सकते थे। अतः कलाकारों के साथ ही उनकी कला का भी अन्त हो जाता था, लेकिन वर्तमान में विज्ञान ने इन सभी समस्याओं का निराकरण कर लिया है। विज्ञान की प्रगति 16वीं शताब्दी के बाद प्रारम्भ हुई, जिसका श्रेय पश्चिमी विद्वानों को जाता है। आज हमारे पास देश–देशान्तर की ध्वनि सुनने के लिए रेडियो, दूर के चित्रों व आंखों देखी घटनाओं का चित्रण टेलीविजन, कैमरा, टेलीफोन तथा कम्प्यूटर आदि अनेक उपकरण विद्यमान हैं। विज्ञान के माध्यम से अच्छे–अच्छे कलाकारों की कला को बहुत समय तक जीवित रखा जा सकता है। पुराने कलाकारों की कला एवं उनका गायन–वादन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से आज भी हमारे पास सुरक्षित है।

संगीत की दृष्टि से देखें तो ध्वनि कम्पन के सम्बन्ध में हुई विज्ञान की प्रगति ने संगीत और विज्ञान दोनों का आपस में समन्वय स्थापित कर दिया है। प्राचीन समय में गायक अपनी आवाज को इस प्रकार तैयार करते थे कि एक सभा या बड़ी महफ़िल में उनकी आवाज सभी को सुनाई देती थी, लेकिन वर्तमान में गायकों को इलक्ट्रॉनिक मीडिया के कारण इन कठिनाईयों का सामना नहीं करना पड़ता। माइक्रोफन के कारण हल्की आवाज भी बड़ी से बड़ी श्रोताओं की भीड़ में सुनाई देती है। इस प्रकार श्रोता संगीत का आनन्द अच्छी प्रकार से ले सकते हैं। विज्ञान ने रेड़ियो, टेपरिकार्डर, माईक तथा दूरदर्शन इत्यादि अनेकों माध्यम संगीत को दिए हैं। जो संगीत के प्रचार–प्रसार में काफी सहायक सिद्ध हुए हैं। किसी कलाकार के गायन या वादन की किसी विशेषता को सुन व समझ कर अपने गायन या वादन में लाने का यत्न करना ही संगीत शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग है। इस दृष्टि से वैज्ञानिक उपकरण संगीत में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इलक्ट्रॉनिक मीडिया का संगीत के प्रचार व प्रसार में विशेष योगदान है। इसके द्वारा जहाँ मनुष्य ने जिन्दगी की आधारभूत जरूरतों में सुविधा प्राप्त की है, वहीं संगीत सुनने, सीखने व सिखाने आदि में भी सुविधा प्राप्त होनी सम्भव हुई। दूरदर्शन के माध्यम से कलाकार की प्रस्तुति एवं भावाभिव्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। दूरदर्शन पर आज–कल ऐसे कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है, जिनका सम्बन्ध विशेष रूप से संगीत से होता है। इन कार्यक्रमों का विद्यार्थी तथा शिक्षक दोनों के लिए लाभ है। दूरदर्शन पर उच्चकोटि के कलाकारों का साक्षात्कार भी करवाया जाता है तथा अनेक विषयों पर चर्चा की जाती है, जिससे विद्यार्थियों में संगीत के शास्त्र पक्ष के ज्ञान का भी विकास होता है। दूरदर्शन पर अनेक स्थानों पर हुए संगीत समारोहों की रिकार्डिंग को भी दिखाया जाता है, जो विद्यार्थी उन संगीत समारोही को सुनने के लिए साधन नहीं जुटा पाते हैं, वे घर बैठे ही संगीत कार्यक्रमों को प्रत्यक्ष रूप में सुन एवं देख सकते हैं।

सन् 1960 ई. के लगभग टेपरिकार्डर या कैसटों का एक प्रचलन आरम्भ हुआ। रिकार्ड और कैसट कम्पनियों ने आधुनिक समय में व्यवहृत संगीत की स्थिति में एक प्रकार की जागृति उत्पन्न की है। इन कम्पनियों ने संगीत के प्रचार में जो योगदान दिया है, वह अति महत्त्वपूर्ण है। इन कम्पनियों ने अनेक उस्ताद कलाकारों की कला को अपने रिकार्ड और कैसटों में बांध कर लोगों के सामने प्रस्तुत किया है। केसटें संगीत का प्रचार करने का एक अच्छा साधन प्रमाणित हुई हैं। टेपरिकार्ड में एक खाली कैसेट डालकर कलाकार अपने अन्दर के गायन या वादन को रिकार्ड करके उसको सुनकर अपने गुण व दोष महसूस कर सकता है। इसके अतिरिक्त किसी समारोह में कलाकार द्वारा प्रस्तुत की गई कला को कैसेट में रिकार्ड करके अपने पास रख सकता है। रिकार्ड कम्पनियों के द्वारा संगीत की सभी शैलियों के प्रचार व प्रसार में बढ़ावा हुआ है। शास्त्रीय संगीत की

[1]. B.N. Ahuja, Audio Visual Journalism, p. 98, 99.

सभी शैलियों को घर–घर पहुंचाया गया है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी या शोधकर्ता संगीत से संबधित जानकारी को भी टेपरिकार्डर की सहायता से एकत्रित कर सकता है। ग्रामोफोन का अविष्कार टेपरिकार्डर से बहुत पहले हो चुका था। टेपरिकार्डर के पश्चात ग्रामोफोन का अब संगीत में कोई महत्त्व नहीं रहा है। ग्रामोफोन के माध्यम से भी कलाकारों की कला को सुरक्षित रखा जाता था। विज्ञान की नई–नई उपलब्धियों में कम्पयूटर का भी विशेष योगदान संगीत के क्षेत्र में माना जाता है। संगीत से संबन्धित विषयों पर शोध करने के लिए कम्पयूटर का प्रयोग किया जाता है। क्रियात्मक संगीत में भी कम्पयूटर का प्रयोग अति महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो रहा है। नई तकनीक के अनुसार कम्प्यूटर के माध्यम से संगीत की अनेकों धुनें तैयार की जा रही हैं। यह विज्ञान और संगीत की आधुनिकतम उपलब्धि है। इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से संगीत एवं मीडिया आथवा विज्ञान का सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है, जो संगीत के भविष्य के लिए शुभ संकेत है।

अगर संगीत के क्रियात्मक पक्ष के विकास की चर्चा की जाए तो, मालूम होता है कि संगीत को उन्नत करने और जन–जन तक पहुंचाने में आकाशवाणी[2] का योगदान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। आकाशवाणी के कलाकारों को व्यवसायिक दृष्टि से यहाँ अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाता है। परन्तु आकाशवाणी के कलाकारों को जो पारिश्रमिक दिया जाता है, इस हद तक कम होता है कि एक कलाकार उससे अपनी आधारभूत आवश्यकताएं भी पूरी नहीं कर पाता। इसके साथ ही आकाशवाणी केन्द्रों में जो अधिकारी होते हैं, उनमें से अधिकरतर का संगीत के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता, जबकि आकाशवाणी के अधिकतर प्रसारण संगीत पर ही मूल रूप से आधारित होते हैं। अतः संगीत के विद्वानों अथवा अधिकारियों को चाहिए कि वे इस प्रकार के स्थानों पर संगीत से सम्बन्धित विद्यार्थियों की नियुक्ति करवाने का प्रावधान बनाएं और इस प्रकार के विषयों के लिए सरकार से भी सहयोग के लिए आवेदन करें। इसी प्रकार का क्रम टेलीविज़न आदि के विषय में भी अपनाया जाना चाहिए।

सही मायने में अगर संगीत के किसी पक्ष में विकास हुआ है, तो वह सुगम संगीत है। वाद्य के क्षेत्र में भी संगीत का काफी विकास देखने को मिलता है। संगीत से सम्बन्धित यह व्यवसाय भी काफी सार्थक सिद्ध हो रहा है। स्वतन्त्र अथवा एकल वादन और सहगायन–वादन के माध्यम से बहुत से कलाकार अपनी आजीविका का अर्जन कर रहे हैं। इसके साथ ही वाद्यों से सम्बन्धित अनेकों कम्पनियाँ आज देश–विदेश में अच्छा व्यवसाय कर रही हैं। विभिन्न प्राचीन वाद्यों के आधार पर नवीन वाद्यों का निर्माण किया जा रहा है। सुगम संगीत में तो अनेकों विदेशी वाद्यों का प्रयोग इस प्रकार किया जा रहा है कि आने वाले संगीत के विद्यार्थियों को केवल शास्त्रों में ही इनके विदेशी होने का प्रमाण मिलेगा, परन्तु व्यवहार में इनका प्रयोग देशी वाद्यों से अधिक होना अपेक्षित ही है। इसी प्रकार कुछ भारतीय वाद्य भी विदेशों में प्रचलित हो रहे हैं। दक्षिण भारत के एक कम्प्यूटर वैज्ञानिक तथा संगीतज्ञ ने विद्युतीय (इलैक्ट्रॉनिक) तबले तथा तानपुरे का निर्माण किया है। इन दोनों वाद्य यन्त्रों के निर्माण में यह विशेषतः ध्यान रखा गया है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत के अनुकूल उन पर संगीत की रचना की जा सके। इन वाद्यों के आविष्कार से भारतीय संगीत के कलाकारों को संगीत साधना में बहुत सहायता मिली है और भविष्य में भी यह अपेक्षित ही है तथा संगीत के एक नवीन व्यवसाय का आविर्भाव भी हुआ है। संगीत से सम्बन्धित विद्यार्थी अच्छे वाद्यों के निर्माण में अपना योगदान दे कर इस कार्य को बाज़ार में एक व्यवसाय के रूप में भी ग्रहण कर सकते हैं। संगीत के वाणिज्य अथवा व्यापारिक पक्ष में भी राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यवसाय की बहुत संभावनाए हैं। इस संदर्भ में मुम्बई जैसे महानगरों में कई पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। वाणिज्य तथा व्यापार (कॉमर्स तथा एम.बी.ए) से सम्बन्धित चल रहे पाठ्यक्रमों में संगीत एवं मनोरंजन में व्यापार के लिए विशेष प्रकार से प्रशिक्षण दिया जा रहा है और इसके लिए संगीत से सम्बन्धित विद्यार्थियों को शिक्षण अथवा प्रशिक्षण के लिए नियुक्त किया जाता है।

संगीत के सम्बन्ध में श्रेष्ठ पुस्तकें भी प्रकाशित होने लगी हैं। संगीत कला के विकास एवं व्यवसाय की दृष्टि से इनको शुभ लक्षण माना जा सकता है। क्योंकि जो विद्यार्थी अथवा शोधार्थी संगीत के क्रियात्मक एवं शैक्षिण पक्ष में आजीविका कमाने में सफल नहीं हो पाते हैं, वे संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों एवं पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन एवं प्रकाशन कार्यालयों में भी रोजगार जुटा सकते हैं अथवा स्वयं के प्रकाशन कार्यालय भी चला सकते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि संगीत से सम्बन्धित अन्य भी अनेकों व्यवसाय के क्षेत्र हैं, जिनमें विद्यार्थी अपनी आजीविका को दक्षता एवं सम्मानपूर्वक ग्रहण कर सकते हैं। हमारे विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में ऐसी कोई व्यवस्था विभाग स्तर पर नहीं है, जो संगीत से सम्बन्धित व्यवसायिक क्षेत्रों का ज्ञान विद्यार्थियों को करवाए। अतः देश व प्रदेश के साथ–साथ ऐसी व्यवस्था भी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों को विदेशों के अन्तर्गत होने वाले व्यवसायिक क्षेत्रों एवं सम्भावनाओं से अवगत करवा सके। शास्त्रीय संगीत का प्रचार–प्रसार करने के लिए उसके स्वरूप को विशिष्ट देश अथवा स्थान के अनुरूप परिवर्तित करने का भी अवकाश प्रदान करना चाहिए, ताकि हमारा संगीत वहाँ पर एक उचित स्थान प्राप्त कर सके और व्यवसाय अथवा रोजगार के नवीन साधनों का विकास हो सके।

इस संदर्भ में 'जनसंचार एवं मीडिया प्राद्योगिकी संस्थान' कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र का प्रथम प्रयास सराहनीय है। संस्थान के अनुभवी, परिश्रमी एवं विवेकशील निदेशक प्रो. बी. के. कुठियाला ने इस दिशा में एक ऐतिहासिक एवं महत्त्वपूर्ण कदम उठाते हुए ***'संगीत, मीडिया एवं इलैक्ट्रॉनिक्स'*** नाम से एक नवीन पाठयक्रम को संचालित किया है, जो भविष्य में संगीत को एक व्यावसायिक कार्य के रूप ग्रहण करने वाले लोगों को तो रोजगार के उचित साधन प्राप्त करवाएगा ही; साथ ही संगीत एवं मीडिया से सम्बन्धित विद्यार्थियों को इन्जीनियरिंग, बिजिनेस मैनेजमैन्ट व मारकेटिंग के विद्यार्थियों की भान्ति ही अनेक व्यवसाय उपलब्ध करा सकने में भी सक्षम है। यह विषय संगीत एवं मीडिया से जुड़े हुए व्यक्तियों को विश्वभर में स्थापित एवं संचालित बृहत् मनोरंजन उद्योग की व्यवसायिक दृष्टि से सम्पूर्ण जानकारी करवा कर कलाकार एवं साधारण समाज के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने के लिए तैयार करेगा। इस विषय के विद्यार्थी स्वयं संगीत के विभिन्न कार्यक्रमों की प्रस्तुति देने के साथ–साथ मनोरंजन एवं तकनीकी संचार के अन्य क्षेत्रों यथा–रेडियो, दूरदर्शन, दूरदर्शन के अन्य सैंकड़ों चैनलस्,[3] ऐड कम्पनियों[4], रिकॉर्डिंग स्टुडियो, संगीत एवं मनोरंजन से सम्बन्धित सरकारी एवं गैर–सरकारी कम्पनियों, संगीत एवं मनोरंजन से सम्बन्धित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक बाजारों, संगीत से सम्बन्धित वाद्य यन्त्रों का निमार्ण करने वाली कम्पनियों, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय अथवा उच्च स्तर पर होने वालो कार्यक्रमों तथा संगीत एवं अन्य मनोरंजन से सम्बन्धित शैक्षणिक विषयों में भी रोजगार के अनेकों साधनों को उपलब्ध कराने में सक्षम है।

---

[2]. Keval J. Kumar, Mass Communication in India, p. 90, 91.
[3]. Keval J. Kumar, Mass Communication in India, p. 213, 214.
[4]. Advertising Principles and Practice, Seventh edition, p .255-258.

उपर्युक्त विषय के विद्यार्थियों को संगीत अथवा प्रसिद्ध कलाकारों की अमूल्य कृतियों को धरोहर के रूप में सुरक्षित करने का भी विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके परिणामस्वरूप वृद्ध एवं समृद्ध कलाकारों की अमूल्य कृतियां भावि पीढ़ियों को उपलब्ध हो सकेंगी, जिनके आधार पर भावी कलाकार नित–नवीन परिक्षण करके संगीत एवं मनोरंजन के क्षेत्र को समृद्ध करने में अपना योगदान दे सकेंगे। मनोरंजन के साथ–साथ वर्तमान समय में संगीत को चिकित्सा विज्ञान के साथ भी जोड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए संगीत एवं योग को मिलाकर एक नवीन पाठ्यक्रम का निर्माण एवं संचालन किया गया है, जो भविष्य में साधारण समाज के लिए स्वास्थय से सम्बन्धित अनेकों सुविधाएं प्रदान करेगा और संगीत से सम्बन्धित विद्यार्थियों को व्यवसाय के नवीन क्षेत्र भी उपलब्ध कराएगा। इस प्रकार के सृजनात्मक तथा विवेकपूर्ण कार्य किसी भी विषय, व्यक्ति और व्यवसाय को समाज में उच्च स्थान दिला में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इनके अतिरिक्त भी संगीत एवं मनोरंजन क्षेत्र में व्यवसाय की अपार सम्भावनाएं हैं। विद्यार्थियों को भी अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए सोच–समझकर अपने विषयों का निर्धारण रुचि एंव क्षमता के आधार पर करना चाहिए। केवल प्राचीन एवं परम्परागत विषयों के पीछे न पड़ कर व्यवसाय एवं रोजगार बहुल विषयों का चुनाव करना चाहिए। इस प्रकार की विवेकशीलता उज्ज्वल भविष्य के लिए अत्यावश्यक होती है। अगर संगीत एवं संस्कृति और वाणिज्य एवं व्यापार, स्वास्थय, संचार तथा मनोरंजन जगत से सम्बन्धित विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षक एवं वरिष्ठ विद्वान इस प्रकार के विषयों पर उचित ध्यान दें, तो निःसंदेह ही पूर्ण आशा ही नहीं वरन दृढ़ विश्वास है कि निकट भविष्य में भारतीय संगीत, संस्कृति, स्वास्थय, वाणिज्य एवं व्यापार, जनसंचार तथा मनोरंजन के क्षेत्र से जुड़े हुए विद्यार्थी, शोधार्थी, संगीतकार, विद्वान एवं संगीत से सम्बन्धित व्यापारी आदि सभी उच्चतम शिखर पर पहुंचकर अपनी विशेषताओं के दम पर सांस्कृतिक एवं कलात्मक विषयों के साथ–साथ व्यवसायिक दृष्टि से भी विश्व का मार्गदर्शन करेगें।